ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना का स्वरूप और आलोच्य उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

Nature of Social and Political Consciousness in The Novels of Mannu Bhandari and Brief Introduction of The Novels Under Review

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

ईश्वर सिंह
अध्यापक,
शिक्षा विभाग,
रा. उ.प्रा. विद्यालय,
चाँदबासनी, डीडवाना
(नागौर) राजस्थान, भारत

सारांश

हिन्दी साहित्य जगत् में अन्य गद्य विद्याओं की तरह उपन्यास का प्रादुर्भाव भी अंग्रेजी साहित्य के अनुसार ही हुआ है। हिन्दी में उपन्यास अंग्रेजी भाषा के 'नावेल' का ही रूपांतरण है । प्रारम्भ में अंग्रेजी के प्रभाव से बंगला उपन्यासों की रचना हुई। इसका परिणाम यह हुआ है कि हिन्दी के अनेक लेखक बंगला के उपन्यास साहित्य से बहुत प्रभावित हुए। बंगला के अनेक उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद हुआ । इस प्रसंग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है – ''इस उत्थान के भीतर बंकिमचन्द्र, रमेशचन्द्र, चंडीचरण सेन, शरत् बाबू, चारूचन्द्र इत्यादि बंगला भाषा के प्रायः सब प्रसिद्ध–प्रसिद्ध उपन्यासकारों की बहुत सी पुस्तकों के अनुवाद तो हो ही गये, रवीन्द्र बाबू के भी 'आंख की किरकिरी' आदि कई उपन्यास हिन्दी रूप में दिखाई पड़े, जिनके प्रभाव से इस उत्थान के अंत में आविर्भूत होने वाले हिन्दी के उपन्यासकारों का आदर्श बहुत कुछ ऊंचा हुआ। ''[1]

आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत् में मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिवाद, अति यथार्थवाद, कुण्ठावाद और यथार्थवाद की विकृति, प्रकृतिवाद, सामाजिक तथा राजनीतिक आदि कतिपय साहित्य को प्रेमचन्द– युग के साहित्य से भिन्न कर देते है।

''प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यासों को एक सर्वथा नवीन दिशा प्रदान की और उसे शैशवावस्था से निकाल कर प्रगति और विकास की और उन्मुख किया, अतः इन्हीं के आधार पर काल–विभाजन तर्क संगत माना जाता है।'' [2]

Like other prose schools in the Hindi literature world, the novel has also emerged according to English literature. The novel in Hindi is an adaptation of English-language Shnavalesh. Initially, Bengali novels were created with the influence of English. As a result, many Hindi writers were greatly influenced by Bangla's novel literature. Many novels of Bangla were translated into Hindi. In this context, Acharya Ramchandra Shukla has written - Within this rise, Bankim Chandra, Ramesh Chandra, Chandicharan Sen, Sharat Babu, Charuchandra etc. Almost all the famous books of famous and famous novels of Bengali language have been translated, even Ravindra Babu Many novels such as Sankhya's Kirikrishish appeared in Hindi form, due to which the influence of Hindi novelists who emerged at the end of this rise has raised a lot. Sh [1]

In modern Hindi literature world, psychological, individualism, hyperrealism, frustration and distortion of realism, naturalism, social and political etc. differentiate certain literature from Premchand-era literature.

Shpremchand gave a completely new direction to Hindi novels and moved them out of infancy and oriented them towards progress and development, hence on the basis of these, time-division is considered logical.[2]

मुख्य शब्द : उपन्यास, गद्य विधाओं, रूपांतरण, बंगला, अनुवाद, आविर्भूत, प्रकृतिवाद, सामाजिक, राजनीतिक, शैशवावस्था, काल–विभाजन।

Novels, Prose Genres, Adaptations, Bengali, Translation, Inventions, Naturalism, Social, Political, Infancy, Time Division.

प्रस्तावना

साहित्यकार एक प्रबुद्ध, जागरूक व संवेदनशील प्राणी होता है । अपने युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों से अलग हो कर रचना कर पाना उसके लिए एक अत्यंत दुष्कर कार्य है । ये सभी परिस्थितियां प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से साहित्य सृजन की प्रेरणा देती है। मन्नू भण्डारी के कुल पाँच उपन्यास प्रकाशित हुए हैं जिनमें 'महाभोज' राजनीतिक उपन्यास, 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान', 'स्वामी', सशक्त सामाजिक उपन्यास हैं। मन्नू भण्डारी के उपन्यास 'आपका बंटी' (1971) में बंटी को केन्द्र में रखकर समकालीन भारतीय परिवेश से बंधी नारी और उसकी पारिवारिक स्थितियों से प्रभावित बच्चे की मनः स्थितियों का चित्रण, बड़ी कुशलता के साथ किया गया है। नवीन मूल्यों में गुम्फित दाम्पत्य–जीवन के सामाजिक पक्ष को भी मन्नू भण्डारी ने बहुत ही मार्मिक रूप में समाज के समक्ष उपस्थिति कर दिया है। दाम्पत्य–जीवन के विघटन का कुप्रभाव संतान पर सबसे अधिक पड़ता है। संतान की मनोवृत्ति दूषित और विरोधी हो जाती है। शकुन के जीवन द्वारा इस उपन्यास में दाम्पत्य जीवन को खोकर खाली और खोखली हो गयी थी, उसके द्वारा प्राचीनतम पर नवीनता की स्थापना और नवीनता की निरर्थकता प्रत्यक्ष दिखाकर नये ताने बाने बुने गये है । दाम्पत्य जीवन के नये मूल्यों में सजा संवरा यह सुगठित उपन्यास है । 'एक इंच मुस्कान' (राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी की कृति) में वर्तमान युवक–युवतियों में बुद्धिजीवी प्राणियों में मानसिक तनाव की अधिकता को उजागर किया गया है । वर्तमान दाम्पत्य जीवन विक्षुब्ध है, खोखला है, उसमें प्यार की गहराई और एकता का अभाव है। इस दाम्पत्य जीवन के नये आवरणों का राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी ने सूक्ष्म विश्लेषण किया है। अतः मानव मन की आंतरिक वृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण तथा तथ्य सत्य प्रतीत होता है। 'स्वामी' (1980), एक त्रिकोण प्रेम कथा है, जिसमें मनोवैज्ञानिक उलझनों से अनवरत उलझती नारी अंत में अविश्वास से विश्वास, अनास्था से आस्था और नास्तिकता से आस्तिकता की प्रक्रिया से होती हुई गन्तव्य तक पहुँच जाती है।

'कलवा' (1971) में न सामाजिक दायरा है और न राजनीतिक । परंतु 'कलवा' उपन्यास के माध्यम से कर्म करना ही जीवन का लक्ष्य है व जीवन में ईमानदारी और सच्चाई से बढ़कर कुछ भी अहम् नहीं है जो हमारे भविष्य को उज्ज्वल बना सके। भाग्य के भरोसे बैठे रहना या अपनी पैतृक सम्पति के बलबूते पर आश्रित रहना भूख को बुलावा देना मात्र है।

''साहित्य के सृजन में साहित्यकार के संस्कार, पारिवारिक वातावरण, उससे मानस पटल पर अंकित प्रभाव तथा इस प्रभाव के द्वारा निर्मित विचारधारा और मान्यताओं का महत्त्ववपूर्ण स्थान होता है।''[3]

रचनाकार के जीवन को कब और कौनसी सामाजिक घटना असाधारण बना देने में सहायक सिद्ध हो जाती है , कहा नहीं जा सकता है। यही कारण है कि किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करते समय अध्येता के समक्ष सामाजिक घटनाएं एक खोज का विषय बन जाती है। 'कलवा' उपन्यास में मन्नू जी ने समाज में जाति भावना अहम में बदल जाती है पर उन्नत और उच्च सोच वाले व्यक्ति इस बात को महत्त्व नहीं देते हैं और प्रतिभा को पहचान कर उसका हर प्रकार से पूर्ण मानस से साथ देने का संकल्प लेते हैं और समाज की जातिगत भावना को भूल जाने को प्रवृत्त करते हैं। जाति–भावना (जातिवाद)हमारे समाज में विकास में बाधक है। जाति विशेष से व्यक्ति महान नहीं होता है महानता का कारण और कारक है– उसका कर्म। कर्म से हर व्यक्ति अपने भविष्य में कुछ विशेष कर सकता है और अपने समाज को खुशहाल और समृद्ध बना सकता है । समाज में जो हीन भावना, जातिवाद, सामन्तवाद, स्वार्थ भावना, चापलूसी, झूठी प्रंशसा और ऊँच–नीच की भावना एवं भाग्यवाद जैसे भावों को छोड़कर अपने कर्म से, काम से और नम्रता से ही समाज को अग्रणी बनाया जा सकता है । और जागृत करने का बीड़ा मन्नू जी ने 'कलवा' उपन्यास के माध्यम से उठाया है। उन्होंने समाज की कलुषित मनोवृति को अपने मन से झाँका है और तह तक जाकर लेखनी से संजोया है।

मन्नू भण्डारी के उपन्यास में राजनीतिक चेतना का स्वरूप

'महाभोज'आज के राजनीतिक जीवन में आयी तिकड़मबाजी, शैतानियत, मूल्यहीनता और संड़ाध का चित्रण करने वाला उपन्यास है । आज की राजनीतिक का पूंजीवाद व्यवस्था ने किस प्रकार की भ्रष्ट और निकम्मा बना दिया है । उसका प्रत्यक्ष चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । 'महाभोज' की रचना में सामाजिक उत्पीड़न और उन पर टिकी हुई व्यवस्था पोषक राजनीतिक के विरूद्ध संवेदनशील रचनाकार की विनम्र किन्तु साहसपूर्ण प्रतिक्रिया है। 'महाभोज' का परिवेश हमारा आधुनिक राजनीतिक जीवन है। वर्तमान में व्याप्त कुर्सी की राजनीति को लेखिका ने इस उपन्यास में खूबी से बांधा है। इस कृति का राजनैतिक परिवेश अत्यंत भ्रष्ट, घिनौना और लज्जित करने वाला है। देवतुल्य, 'राजनेताओं' के बीच कुर्सी की लड़ाईयां हो रही है। ज्योतिषियों का महत्त्व, अंगूठियों का प्रचलन इत्यादि नाना प्रकार के अंधविश्वास हमारे मंत्रियों और राजनेताओं के व्यक्तित्व के अंग बन गये हैं। इतना ही नहीं आज की राजनीति में गाली–गलौच, हुड़दंग, गुण्डागर्दी और हत्या तक मान्य हो गयी है । वोटों के लिए राजनीति, लड़ाने–भिड़ाने, काले को सफेद और सफेद को काला करने की राजनीति आज जोरों पर है। इस कटु यथार्थ को 'महाभोज' में उद्घाटित किया गया है। देश में फैली राजनीतिक भ्रष्टता के अन्य रूपों को भी इसमें समेटने का प्रयास किया गया है। आज के राजनेताओं द्वारा आश्वासनों तथा खोज–बीन के ढ़ोग उनकी असलियत की भी पड़ताल इस उपन्यास में की गयी है। हिन्दी उपन्यास परम्परा में शुद्ध राजनीतिक उपन्यासों की संख्या नगण्य सी है। आज की राजनीति जनता द्वारा जनता के लिये न रहकर केवल राजनेताओं के स्वार्थ सिद्ध करने का आधार

मात्र रह गयी है। 'महाभोज' में आज की राजनीति की विसंगतियों को साकार किया गया है। हमारे समाज में रह रहे व्यक्तियों के सुख दुःख को भुलाकर राजनीति केवल राजनेताओं के सुख–दुःख का साधन मात्र रह गयी है। येन, केन, प्रकारेण कुर्सी को पाना और ऐशो आराम की जिन्दगी जीना ही इसका लक्ष्य और उद्देश्य रह गया है।

आलोच्य उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

सामाजिक उपन्यास

मन्नू भण्डारी ने 'एक इंच मुस्कान', 'आपका बंटी' उपन्यासों के माध्यम से लेखन के क्षेत्र की यात्रा तय की है। इनके उपन्यासों में 'एक इंच मुस्कान', 'आपका बंटी' और 'स्वामी' सामाजिक उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं। मन्नू जी के लेखन में स्थायित्व है। उनके रचना संसार से स्पष्ट है कि उन्होंने उसका स्वयं साक्षात्कार किया है और लेखिका के रूप में अपना आविष्कार भी किया है। वस्तुतः सच्चा लेखक वही होता है जो समाज की समस्याओं की तह तक जाये और उनका कारण ढूँढ कर समाज के युग दृष्टाओं के सामने अपने लेखन के माध्यम से सामने रख सके ताकि समाज यथार्थ को जान सके और उस पर क्रिया – प्रतिक्रिया से राजनेताओं और शोषणकर्ताओं से सजग रह सके । इस प्रकार समाज को शोषण से बचाने में अपने दायित्व का निर्वहन करता है। मन्नू भण्डारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में बंटी को केन्द्र में रखा गया है। उसके माता–पिता के बीच तलाक हो चुका है और वह माँ के पास रहता है। माँ पुनर्विवाह कर लेती है और बंटी के लिये माँ के पास रहना कठिन हो जाता है। वह पिता के यहां जाता है। सौतेली माँ के साथ भी वह समझौता नहीं कर पाता तब बंटी को हॉस्टल में रख दिया जाता है। इस प्रकार एक तलाकशुदा दम्पती के जीवन में बच्चे की स्थिति का चित्रण किया है। 'एक इंच मुस्कान' एक त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी है । एक पुरूष से प्यार करने वाली दो विपरीत मनोवृत्तियों की नारियां है– रंजना हृदयवादिनी और अमला बुद्धिवादिनी। रंजना अत्यंत भावुकता के कारण दाम्पत्य जीवन को मिटा देती है और पति का घर छोड़कर सहेली के घर रहने चली जाती है। बुद्धि की प्रखरता के कारण अमला जीवन से समझौता नहीं कर पाती। अमर, एक विपन्न साहित्यकार है। अमला उसकी कला साधना की प्रेरणा बनकर सृजनात्मक शक्ति उत्पन्न करना चाहती है। वह चाहती है कि अमर नौकरी न करे केवल साहित्य सृजन ही करे। अमर उसके प्रभाव में आकर ऐसा करता भी है। एक दिन पुरी में लहरों के बीच अमला समा जाती है और अमर एकाकी रह जाता है। 'स्वामी' उपन्यास की कथा मिनी को केन्द्र में रख कर घूमती है । मिनी का विवाह घनश्याम से होता है और उधर परिवार वाले घनश्याम की उपेक्षा करते हैं। मिनी इसे सहन नहीं कर पाती और झगड़ती है । एक दिन पूर्व प्रेमी नरेन्द्र के साथ वह घर छोड़कर वह भाग जाती है। उसके मन में अनेक प्रकार के विचार उठते है, उसे लगता है कि उसने घनश्याम के प्रति अन्याय किया है , अतः वह प्रेमी को छोड़कर वह मायके चली जाती है । इस प्रकार संबंधों की मनौवैज्ञानिक उलझनों से अनवरत उलझती मिनी अंत में अविश्वास से विश्वास, अनास्था से आस्था और नास्तिकता से आस्तिकता की प्रक्रिया से होती हुई गन्तव्य तक पहुंच जाती है।

'कलवा' उपन्यास में शिक्षा सबको एक जैसी मिलती है; पर सब उसे अपने ढंग से ग्रहण करते हैं के बारे में बताया गया है । उपन्यास में तीन पात्र है जिनमें राजा, साहूकार व चमार वर्ग से सम्बद्ध है । तीनों एक ही आश्रम में शिक्षा ग्रहण करते हैं। राजकुमार जनता को दुःख के सागर में झौंक कर खुद घास छीलते हुये जिन्दगी काटता है। इधर कलवा चमार सत्य, ईमानदारी और मेहनत से अपने को सुखी ही नहीं बनाया बल्कि अपने पूरे राज्य को ही स्वर्ग बना देती है।

राजनीतिक उपन्यास

मन्नू भण्डारी वैसे तो कथाकार है पर कथाओं में कहानी के साथ ही उपन्यास भी लिखे हैं। मन्नू जी के उपन्यासों में राजनीति उपन्यास तो एक केवल एक ही है लेकिन यह उपन्यास इतना प्रासंगिक है, इतना यथार्थ है कि हजार उपन्यास भी इस एक की विषयवस्तु और विचारधारा को समाहित नहीं कर पाते हैं। यह यथार्थवादी उपन्यास है – 'महाभोज' । 'महाभोज' आज के राजनीतिक जीवन में आई मूल्यहीनता, तिकड़मबाजी, शैतानियत और संड़ाधता का चित्रण करने वाला उपन्यास है । आज की राजनीति ने जीवन को अर्थहीन और विषाक्त बना दिया है। इसी पूंजीवादी व्यवस्था ने राजनीति को पूर्णतः भ्रष्ट और दूषित बना दिया है। मन्नू भण्डारी ने महाभोज में इसी राजनीति का वर्णन किया है।

उद्देश्य का महत्त्व

उपन्यास आधुनिक युग में अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त एवं उपर्युक्त माध्यम माना जाता है। इस दृष्टि से उसकी समानता अन्य साहित्यांग नहीं कर सकते । वास्तव में उपन्यासकार अपनी कृति में किसी विशिष्ट दृष्टिकोण का सहारा लेता है और उसके आधार पर मानव जीवन का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवन के विविध पक्षों को गहराई से परखने की चेष्टा करता है।

उपन्यासों की रचना के पीछे जीवन के प्रति कोई विशिष्ट उद्देश्य मिलता है। उपन्यास में, उद्देश्य पूर्ति के लिये भी लेखक प्रायः प्रत्यक्ष या परोक्ष (अप्रत्यक्ष) दो विधियों का आश्रम लेता है। मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में परिवेश वैयक्तिक या पारिवारिक न होकर सामाजिक है। इस दृष्टिकोण को 'महाभोज' नामक राजनीतिक उपन्यास में देखा जा सकता है । महिला लेखिकाओं में मन्नू भंडारी के लेखन का उद्देश्य उनसे हटकर है। उनके 'उपन्यासों' में ग्रामीण परिवेश के चित्रण और वहाँ घटित होती हुई परिवर्तन की प्रक्रियाओं के विश्लेषण में खामी हो सकती है किन्तु व्यवस्था–पोषक राजनीति और उसके चलते होने वाले सामाजिक उत्पीड़न को बेनकाब करने में लेखिका ने साहस का परिचय दिया है।

'महाभोज' इस तथ्य का साक्षी है कि अब महिला लेखिकाएं घर की चहार दीवारी के भीतर उभरी–दबी पारिवारिक समस्याओं तक सीमित न रहकर समाज के व्यापक संदर्भों से जुड़कर जनहित में उत्कृष्ट सृजन कर रही हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि उपन्यास सिर्फ ज्ञान पर निर्भर नहीं करता है वह एक कलात्मक कार्य है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार" मानव जीवन के अनेक रूपों का परिचय कराना उपन्यास का काम है। यह उन सूक्ष्म घटनाओं को प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न करता है जिनसे मनुष्य का जीवन बनता है और जो इतिहास आदि की पहुँच के बाहर है।"4

प्रेमचन्द के अनुसार" मैं उपन्यास को मानव चरित्र चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"5 इस संदर्भ में मन्नू भंडारी ने सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगति को चुनौती देकर उपन्यास लेखन किया।

उनके उपन्यासों में 'आपका बंटी' अपने ढ़ंग का अकेला उपन्यास है। शकुन और अजय दाम्पत्य–जीवन के तनाव के कारण संबंध–विच्छेद कर लेते हैं।

'महाभोज' एक राजनीतिक उपन्यास माना गया है। इस उपन्यास में सामान्य जनता के प्रति सच्ची सहानुभूति किसी में नहीं है।

हिन्दी साहित्य कोश (भाग–1) में जैसे लिखा है–

"कला की दृष्टि से वस्तुतः वही उपन्यास श्रेष्ठ है, जिसका लेखन पाठकों पर सफलता पूर्वक यह प्रभाव डाल सके कि उसकी रचना से जिस जीवन दर्शन का सन्देश मिलता है, वह उसने बाहर से आरोपित नहीं किया है वरन् वही सामयिक अथवा शाश्वत् सत्य है।" 6

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 340*
2. *डॉ. सुरेश सिन्हा–हिन्दी उपन्यासः शिल्प व प्रवृत्तियां, पृ. 18*
3. *साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा–डॉ. इन्दु शुक्ला, पृ. 1*
4. *पूर्व ग्रह 46–47 उपन्यास अंक (ना. प्र. पत्रिका भाग 15,15 जु. 1910) पृ. 5*
5. *प्रेमचन्द कुछ विचार पृ. 38*
6. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1 पृ. 159*
7. *स्वयं का सर्वेक्षण एवं निष्कर्ष*